टिप्पणी

28

परम्परागत माध्यमों द्वारा संप्रेषण

संप्रेषण एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। यह हर समय होती रहती है। आपकी मुद्राएँ, चलने–फिरने, बात करने का तरीका या कोई काम करना कुछ न कुछ संप्रेषित करता है। यहाँ तक कि आपकी पोशाक, अन्य साजो–सामान तथा आभूषण भी संप्रेषण करते हैं।

उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को देखकर यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति किसी स्थान विशेष से सम्बन्धित है या जो कपड़े उसने पहने हैं वह किसी राज्य विशेष से हैं।

इस अध्याय में आप संप्रेषण के माध्यम के रूप में परम्परागत माध्यम की महत्ता का अध्ययन करेंगे। आप सामाजिक मुद्दों पर परम्परागत माध्यमों द्वारा जागरूकता उत्पन्न करने तथा इन माध्यमों के भविष्य की भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित करने में समर्थ होंगेः–

- संप्रेषण के माध्यम के रूप में परम्परागत माध्यमों की महत्ता की व्याख्या।
- सामाजिक–आर्थिक तथा पौराणिक संप्रेषण के हिस्से के रूप में परम्परागत माध्यमों का वर्णन।
- सामाजिक विषयों पर परम्परागत माध्यमों की भूमिका की पहचान।
- परम्परागत माध्यमों के भविष्य की चर्चा।

28.1 परम्परागत माध्यमों द्वारा संप्रेषण

क्या आपको आश्चर्य नहीं होता कि लोग बिना बिजली, साक्षरता तथा बुनियादी प्रौद्योगिकीय अवसंरचना के कैसे सूचना प्राप्त करते हैं? वे किस तरह संप्रेषण करते हैं? कौन से संप्रेषण माध्यम हैं जिनका वे उपयोग करते हैं?

विकासशील देशों में दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों की टेलीविजन जैसे जनमाध्यमों तक पहुँच नहीं है। उदाहरण के लिए टेलीविजन देखने के लिए बिजली तथा समाचारपत्र पढ़ने के लिए पढ़ा–लिखा होना आवश्यक है। रेडियो के लिए भी रेडियो संकेत प्राप्त करने वाले रिसीवर तथा टॉवर का होना जरूरी है। बिजली तथा सुविधाओं के अभाव में रहने वाले लोगों को सूचनाओं तक पहुँचने में समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

लेकिन परम्परागत माध्यमों के साथ ऐसा नहीं है। इसे प्रदर्शन हेतु केवल थोड़े से स्थान की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन चाय की दुकान के आगे या किसी पेड़ की छाया में हो सकता है। इस तरह यह दर्शकों से संप्रेषण का एक लोचपूर्ण, सजीव तथा स्वाभाविक माध्यम है।

चित्र 28.1 परम्परागत माध्यमः लोचपूर्ण, सजीव व स्वाभाविक

आप पूर्व में ही जान चुके हैं कि संप्रेषण मूलभूत मानवीय आवश्यकता है। हर व्यक्ति को संप्रेषण की आवश्यकता होती है तथा वह संप्रेषण करता है। आम आदमी के साथ

टिप्पणी

संप्रेषण हेतु इसे अनिवार्य रूप से सरल तथा भाषाई बाधाओं से मुक्त होना चाहिए। परम्परागत माध्यम इन अपेक्षाओं को पूरा करते हैं।

परम्परागत माध्यम वैविध्य संपन्न संप्रेषण के साधन हैं। ये इच्छानुरूप उपलब्ध हैं तथा आर्थिक रूप से वहनीय हैं। विभिन्न आयुवर्ग के स्त्री–पुरूष इनका आनन्द उठाते हैं। चूँकि यह सजीव होते हैं अतः ग्रामीण जनता इन पर विश्वास करती है। वास्तव में परम्परागत माध्यम संप्रेषक तथा संदेश प्राप्तकर्ता के मध्य आमने–सामने या प्रत्यक्ष संवाद की स्थितियाँ पैदा करते हैं।

क्या आपने कभी कठपुतली या नुक्कड़ नाटक देखा है? यह परम्परागत माध्यमों के आधुनिक रूप हैं जिन्होंने नाटक, कथा कहना, गीत तथा न त्य जैसे परम्परागत माध्यम रूपों से अनेक तकनीकें तथा रूप ग्रहण किए हैं। क्या यह आपतक कोई संदेश पहुँचाते हैं? कोई भी माध्यम जो आप देखते हैं, उसमें एक या अधिक संदेश सन्निहित होते हैं।

आपने पूर्व के अध्यायों में जन माध्यमों में विज्ञापनों के उपयोग के विषय में पढ़ा होगा। परम्परागत माध्यम इस तरह के विज्ञापनों से मुक्त होते हैं। यह परम्परागत माध्यम की विशिष्टताओं में से एक है। जन माध्यम विज्ञापनों से ही अपनी आय प्राप्त करते हैं, इसके परिणामस्वरूप हो सकता है कि वह विषय सामग्री को लेकर पक्षपात करें जो आम आदमी के अनुकूल नहीं हो। परम्परागत माध्यम जो विज्ञापनों से मुक्त होते हैं, वही संप्रेषित करते हैं जिसकी आवश्यकता होती है या जो उद्देश्यपूर्ण होते हैं। इनके संदेश किसी समस्या या विषय के विविध पक्षों से जुड़े होते हैं तथा इनके द्वारा संप्रेषित सूचना जनोपयोगी होती है।

मनोरंजन हमेशा से परम्परागत माध्यमों का अंग रहा है। मनोरंजन के साथ–साथ विविध विषयों पर दर्शकों को शिक्षित करना भी परम्परागत माध्यमों की महत्वपूर्ण विशेषता रही है। इनके संदेश मनोरंजन, शिक्षा तथा संप्रेषणीयता के तत्वों के साथ संप्रेषित होते हैं। यह कोई अवांछित इच्छा या आकांक्षा नहीं प्रदर्शित करते।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. नीचे दी गयी सूची से परम्परागत माध्यमों की विशेषताएँ स्पष्ट करें:–

   (i) ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन का अच्छा साधन।

   (ii) मूलभूत अवसंरचना की आवश्यकता।

   (iii) बिजली की आवश्यकता होती है।

   (iv) आवश्यकता आधारित माध्यम।

   (v) मनोरंजन का मिश्रण।

(vi) दर्शकों में गलत इच्छाएँ या आकांक्षाएँ विकसित करता है।

(vii) लोचनीय माध्यम।

(viii) स्वाभाविक माध्यम।

(ix) भाषाई बाधा युक्त।

(x) विज्ञापन आधारित।

28.2 सामाजिक-आर्थिक तथा पौराणिक संप्रेषण के अंग के रूप में परम्परागत माध्यम

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि गाँव में हर त्यौहार में इनसे जुड़े कुछ प्रदर्शन या खेल या कुछ परम्परागत प्रेरक विचार या चित्रांकन भी होते हैं। आप यह भी पाएँगे कि गाँव के लोग बूढ़े–जवान, महिलाएँ तथा बच्चों के लिए अलग खेल तथा गतिविधियाँ समाहित होती हैं। इन खेलों में हिस्सेदारी से केवल आराम ही नहीं मिलता बल्कि मनोरंजन भी होता है तथा लोगों में खेलभावना भी विकसित होती है। क्या आपने ऐसे खेलों में भाग लिया है?

यह संप्रेषण के सबसे अच्छे रूपों में से एक हैं। आपने ध्यान दिया होगा कि इन गतिविधियों से हमेशा संप्रेषण होता है। यह अन्तरंग तथा व्यक्तिगत एवं आसानी से स्वीकार्य होते हैं।

चित्र 28.2 : एक पारम्परिक खेल

टिप्पणी

परम्परागत माध्यम सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग होते हैं तथा समुदाय में उसके अनुरूप विकासात्मक मुद्दों को सर्वस्वीकार्य साधनों द्वारा लाने का काम करते हैं। भारत में ये सफल जनउत्प्रेरक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आप यह पूर्व में ही पढ़ चुके हैं कि परम्परागत माध्यमों ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

विकास संदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए परम्परागत माध्यमों के उपयोग का भारत में इतिहास रहा है। अब हम देखेंगे कि यह कैसे हुआ।

शास्त्रीय आख्यानों पर आधारित न त्य, धार्मिक गीत तथा पौराणिक आख्यानों पर आधारित ग्रामीण नाटकों आदि लोकप्रिय परम्परागत माध्यमों का उपयोग ग्रामीण जनता में जनसंख्या, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता सम्बन्धी कार्यक्रमों के लिए किया गया है। इस प्रकार यह संप्रेषक का उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह परम्परागत प्रदर्शन में विविध रूपों का परीक्षण कर समसामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकास संदेशों को ग्रहण करने में सर्वाधिक उपयुक्त लोचपूर्ण माध्यम का चयन करें। लोचनीयता सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। यह ग्रामीण जीवन के लिए परम्परागत माध्यम की उपयोगिता स्पष्ट करती है।

अन्तर–सांस्कृतिक संप्रेषण बाधाएँ यहाँ संचार को प्रभावित नहीं करतीं। हालांकि यह माध्यम संस्कृति तथा क्षेत्र आधारित होते हैं लेकिन वे परस्पर प्रेम–सौहार्द्र का संप्रेषण अशाब्दिक संप्रेषण द्वारा करते हैं। प्रदर्शन तथा ललितकलाएँ भाषा की आवश्यकता नहीं माँगतीं।

क्या आपने बाजार में, प्रदर्शनी या समाज के मिलने–जुलने वाली जगह में संप्रेषण गतिविधियों पर ध्यान दिया है? जब लोग कहीं पर मिलते हैं तो उनके मध्य संप्रेषण होता है तथा विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की संभावना बनती है। आप यहाँ क्या समझते हैं? एक सामाजिक, पारम्परिक या सांस्कृतिक एकत्रण परिचर्चा का आरम्भ करेगा और संप्रेषण शुरू हो जाएगा। बाजार, त्यौहार, परम्परागत, आयोजन, ग्रामीण मेले या उत्सव वह परिस्थितियाँ हैं जिसमें परम्परागत संप्रेषण मूर्त रूप लेता है।

लेकिन हर परिस्थिति के लिए आपको संप्रेषण के अलग रूप की आवश्यकता होगी। परम्परागत माध्यमों की विशिष्टता इन परिस्थितियों की खास जरूरतों के अनुरूप बनने में मददगार होती है।

क्रियाकलाप 28.1: *क्या आप कुछ अन्य स्थानों को पहचान सकते हैं जहाँ लोग आपस में मिलते–जुलते हैं तथा सामाजिक, सांस्कृतिक पारम्परिक संप्रेषण मूर्त रूप लेता है।*

नुक्कड नाटक, न त्य तथा गीत आदि परम्परागत माध्यमों की भारत में विकास संदेशों के संवर्धन में विशेष भूमिका है। विभिन्न सरकारी संस्थाएँ जैसे गीत एवं नाटक प्रभाग, शैक्षणिक संस्थाएँ तथा गैरसरकारी संस्थाएँ परम्परागत माध्यमों का लोगों में जागरूकता

प्रसार हेतु उपयोग करती हैं। उनका बुनियादी प्रभाव भावना पर होता है न कि बौद्धिकता पर। वे रूपों तथा विषयवस्तु की समृद्ध विविधता का जनता के संप्रेषण आवश्यकताओं हेतु सदुपयोग करते हैं।

पाठगत प्रश्न 28.2

1. कम से कम तीन अवसर/स्थितियाँ लिखिए जिसमें संप्रेषण का परम्परागत माध्यम मूर्त रूप लेता है।

   (i) _____

   (ii) _____

   (iii) _____

2. जनता में विकास संदेश प्रेषण में उपयोग किए जाने वाले तीन परम्परागत माध्यम रूपों को सूचीबद्ध करें–

   (i) _____

   (ii) _____

   (iii) _____

28.3 परम्परागत माध्यमों के प्रयोग

परम्परागत माध्यमों द्वारा संप्रेषण का विभिन्न समुदायों में हमेशा सम्मान किया जाता है। क्या आप जानते हैं ऐसा क्यों? क्योंकि यह व्यक्ति की संस्कृति और परम्पराओं में स्थापित हैं। यह सम्मान, मित्रता तथा समझ का माहौल तैयार करते हैं।

क्या आप जानते हैं कि परम्परागत माध्यमों का विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर लोगों को जागरूक करने तथा संवेदना जागृत करने में उपयोग किया जा सकता है? उदाहरण के लिए एचआइवी–एड्स पर आमने–सामने संप्रेषण या अन्तर, वैयक्तिक संप्रेषण द्वारा जागरूकता विकसित करना आसान नहीं है। ऐसे विषय को कठपुतली प्रदर्शन द्वारा आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है जो ज्यादा सुगम तथा प्रभावी हो सकता है। परम्परागत माध्यम स्वास्थ्य संबन्धी बहुत सारे संवेदनशील विषयों को स्पष्ट करने में काफी उपयोगी है जहाँ अन्तर–वैयक्तिक संप्रेषण उपयुक्त नहीं होता। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी बहुत से परम्परागत माध्यमों ने स्वतंत्रता आंदोलन की भावना के प्रसार का काम किया। हमारे देश में सरकार ने परिवार नियोजन, पोलियो प्रतिरक्षण आदि संदेशों के प्रसार में परम्परागत माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया है।

टिप्पणी

क्या आपने कभी 'बैलाड' शब्द के बारे में सुना है? बैलाड एक कविता है जो सामान्यतः संगीतबद्ध होती है तथा प्रायः यह गीत में रूप में प्रस्तुत की जाने वाली कहानी है। बैलाड को 'बुलेट' भी कहा जाता है क्योंकि ये काफी शक्तिशाली होती हैं तथा प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सकती है। 'बैलाड' का उपयोग कर पर्यावरण, ऊर्जा संरक्षण, दहेज आदि विषयों को सरलरूप में गाकर लोगों के बीच प्रस्तुत किया जाता है। यह गीत अक्सर मनोरंजक भी होते हैं। शब्दों की लयबद्ध प्रस्तुति से बैलाड श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालता है।

नुक्कड़ नाटक परम्परागत नाट्य रूपों का संयोजन है तथा वह इनकी तकनीकी का उपयोग करता है। किसी भी समय और किसी भी स्थान पर छोटे नाटकों को प्रस्तुत करने की क्षमता के चलते नुक्कड़ नाटक के संदेशों के लिए हमेशा दर्शक उपलब्ध रहते हैं। बालश्रम, व्यक्तिगत विभेद, पर्यावरण, स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे, महिला आदि सामाजिक विषयों पर गीत, संगीत तथा नाटक के मिश्रण द्वारा प्रस्तुत संदेश दर्शकों को उत्प्रेरित करते हैं तथा उनके ऊपर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

सामाजिक संदेशों के प्रसार में परम्परागत माध्यमों का उपयोग करते समय इसके मूल रूप में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। सामाजिक संदेशों के प्रसार रूप में छेड़छाड़ का खतरा हमेशा बना रहता है। व्यक्ति को इनका उपयोग करते समय सतर्क रहना चाहिए कि इन माध्यमों की शैली, रूप तथा प्रस्तुतियों से छेड़छाड़ नहीं की जाय।

पाठगत प्रश्न 28.3

1. आप 'बैलाड' से क्या समझते हैं?
2. किन्हीं दो पर्यावरणीय मुद्दों की सूचीबद्ध करें जिनके लिए आप परम्परागत माध्यम का उपयोग कर सकते हैं?

28.4 परम्परागत माध्यमों का भविष्य

स्थायित्वः- यदि आप हॉल में सिनेमा देखने या साइबर कैफे में इंटरनेट उपयोग हेतु जाते हैं तो इसके लिए आपको पैसे खर्च करने होते हैं। यह पैसा उन माध्यमों को जीवन प्रदान करता है। इसी तरह परम्परागत माध्यम भी स्थायित्व प्राप्त करते हैं। प्रदर्शन के बाद दर्शक कुछ पैसे देते हैं जो इस कला तथा कलाकारों को बने रहने में मदद करता है। हमारे माता–पिता और पूर्वजों के अलावा यह लोग ही हैं जिन्होंने इन कलारूपों के लिए योगदान दिया है। लोगों से प्राप्त धन से इन माध्यमों को जीवित रहने, विकसित होने तथा समय–समय पर नवोन्मेषी प्रस्तुतियों को सामने लाने में मदद मिलती है।

टिप्पणी

लेकिन क्या आप जानते हैं कि इनमें से बहुत सारे माध्यम अब गायब हो रहे हैं। इससे हमारी संस्कृति और परम्परा का भी क्षरण हो रहा है। बहुत से कलाकारों ने अब टेलीविजन तथा अन्य आधुनिक जन माध्यमों के आने के बाद अपना व्यवसाय बदल दिया है। यह खतरनाक स्थिति है किसी के अतीत तथा सांस्कृतिक इतिहास के विलुप्त होने की। यह माध्यम विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में नहीं पढ़ाए जाते। लेकिन यह इच्छुक युवाओं द्वारा सीखे जाते हैं तथा इस तरह इनका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरण होता है। बहुत सारी मौखिक परम्पराएँ हैं जिनका कोई लिखित दस्तावेज नहीं है। गीत तथा कथाएँ मौखिक रूप से याद की जाती हैं तथा इस तरह लोगों के दिलो–दिमाग में बनी रहती हैं। यदि इन माध्यमों को लेने वाला कोई नहीं रहेगा तो स्वाभाविक रूप से यह समाप्त हो जाएँगे।

परम्परागत माध्यमों पर चार अध्यायों का अध्ययन करने के उपरांत आप शायद समझ गये होंगे कि हमारी भलाई के लिए यह माध्यम कितने उपयोगी हैं। लेकिन इन माध्यमों को जीवित रखने में हम कैसे मदद कर सकते हैं? इसका उत्तरदायित्व कौन लेगा? यह आप और आपके मित्र होंगे। इन माध्यमों को बचाने के लिए हमारे समाज के योगदान की आवश्यकता है। हम इन माध्यमों को उन्हें देखकर, लिखकर, बात करके तथा उनके बारे में सीखकर तथा समग्र रूप से उन्हें जानकर प्रोत्साहित कर सकते हैं।

भारत सरकार लोगों में स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा अन्य सामाजिक विषयों पर जागरूकता के प्रसार में इन माध्यमों का उपयोग कर रही है। परम्परागत माध्यमों के संवर्द्धन तथा उत्थान के लिए सरकार ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की है। इस तरह की संस्थाओं में गीत एवं नाटक प्रभाग, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी, विज्ञापन एवं द श्य प्रचार निदेशालय आदि राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा जनपद स्तर पर सक्रिय हैं।

इन माध्यमों का अंकन करने वाले आधुनिक जनमाध्यमों के विकास से इनके लिए एक खतरा उत्पन्न हो रहा है। हालांकि जन माध्यमों की जनसंचार में अपनी संभावना है, परम्परागत माध्यम सदैव सरल तथा मानवीय सम्बन्धों के लिए उपयोगी हैं। परिवर्तन अवश्यंभावी है। संप्रेषण तथा मीडिया का बदलता रूप परम्परागत माध्यमों का स्थान सीमित कर रहा है। यह आज का चर्चा का विषय है कि कितनी दूर तक इन माध्यमों को इनके मूल रूप में बचाया जा सकता है। बदलते हुए दर्शक वर्ग के साथ यह माध्यम भी आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा विषयवस्तु से प्रभावित हो रहे हैं। राजा–रानी की कथाएँ या पौराणिक आख्यान तेजी से गायब हो रहे हैं। लोगों के प्रोत्साहन तथा वित्तीय मदद के अभाव में कलाकार अपनी रचनात्मक विधाओं से किनारा कर रहे हैं।

जब तक इन माध्यमों का सम्मान किया जाएगा यह माध्यम आगामी पीढ़ियों के लिए बचे रहेंगे। यह सभी हमारी संस्कृति तथा परम्परा की महान धरोहर हैं। लेकिन हमारे

टिप्पणी

समक्ष अनेक परम्परागत माध्यमरूपों को तेजी से बदलाव और क्षरण से बचाकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए बचाने की चुनौती है।

पाठगत प्रश्न 28.4

1. किन्हीं दो सरकारी संस्थानों का नाम लिखें जो परम्परागत माध्यमों को आगे बढ़ाने में सक्रिय हैं।
2. दो तरीकों को सूचीबद्ध करें जिनके द्वारा परम्परागत माध्यमों को बचाया जा सकता है।

28.5 आपने क्या सीखा

→ परम्परागत माध्यम–सामाजिक आर्थिक तथा परम्परागत संप्रेषण का एक भाग।

परम्परागत माध्यमों के प्रयोग–

- सामाजिक विषयों पर जागरूकता का प्रसार।
- विभिन्न मुद्दों पर लोगों की संवेदना को उभारना।

परम्परागत माध्यमों का भविष्य

- स्थायित्व

28.6 पाठान्त प्रश्न

1. परम्परागत माध्यमों की भूमिका का वर्णन करें:–
   (i) संप्रेषण साधन के रूप में
   (ii) सामाजिक–आर्थिक तथा परम्परागत संप्रेषण के भाग के रूप में
2. विकास के विषयों पर परम्परागत माध्यमों का उपयोग कैसे कर सकते हैं, वर्णन करें।
3. उन चुनौतियों की चर्चा करें जो अपने अस्तित्व के लिए परम्परागत माध्यमों के समक्ष है।

टिप्पणी

28.7 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1 1. i, iv, vii, viii

28.2 1. (i) सामाजिक जन सम्मिलिन में संप्रेषण

(ii) त्यौहारों के समय संप्रेषण

(iii) ग्रामीण मेलों में संप्रेषण

(iv) कोई अन्य

2. (i) नुक्कड़ नाटक

(ii) धार्मिक गीत

(iii) परम्परागत न त्य

(iv) कोई अन्य

28.3 1. देखें खंड 28.3

(i) प थ्वी को बचाएँ

(ii) प्लास्टिक के प्रयोग पर प्रतिबंध

(iii) कोई अन्य

28.4 1. (i) गीत एवं नाटक प्रभाग

(ii) ललित कला अकादमी

(iii) कोई अन्य

2. (i) परम्परागत प्रदर्शनों को देखना

(ii) परम्परागत माध्यमों के विषय में लेखन

(iii) कोई अन्य